वेदाङ्गों में व्याकरणशास्त्र की प्रधानता : एक दार्शनिक एवं भाषावैज्ञानिक अध्ययन

*डॉ. शक्तिधर मिश्र

सारांश

भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध परम्पराओं में से एक है। इस परम्परा का मूलाधार वेद हैं, जिन्हें भारतीय संस्कृति में अपौरुषेय तथा शाश्वत ज्ञान का स्रोत माना गया है। वेदों के संरक्षण, अध्ययन, अर्थबोध तथा शुद्ध उच्चारण के लिए जिन सहायक शास्त्रों का विकास हुआ, उन्हें वेदाङ्ग कहा जाता है। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष—ये छह वेदाङ्ग वैदिक ज्ञान परम्परा के संरक्षक माने जाते हैं। इनमें व्याकरणशास्त्र का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भाषा की शुद्धता, शब्दरचना, वाक्यविन्यास तथा अर्थ की स्थिरता को सुनिश्चित करता है। प्रस्तुत शोधपत्र में वेदाङ्गों में व्याकरणशास्त्र की प्रधानता का दार्शनिक एवं भाषावैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण किया गया है।

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य वेदाङ्गों में व्याकरणशास्त्र की केंद्रीय भूमिका को स्पष्ट करना, उसके दार्शनिक एवं भाषावैज्ञानिक महत्व का अध्ययन करना तथा वैदिक ज्ञान के संरक्षण में उसकी उपयोगिता का विवेचन करना है। शोध में गुणात्मक एवं वर्णनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन हेतु प्राथमिक स्रोतों के रूप में वेद, अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त एवं वाक्यपदीय जैसे ग्रंथों का तथा द्वितीयक स्रोतों के रूप में पुस्तकों, शोध पत्रों एवं आलेखों का उपयोग किया गया है।

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि व्याकरणशास्त्र केवल भाषा का नियमबद्ध अध्ययन नहीं है, बल्कि यह सम्पूर्ण वैदिक परम्परा के संरक्षण का मूल आधार है। पाणिनि ने संस्कृत भाषा को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया, कात्यायन ने उसके सिद्धांतों का विस्तार किया तथा पतञ्जलि ने उसे दार्शनिक गहराई प्रदान की। व्याकरण ने वैदिक मन्त्रों की शुद्धता, मौलिकता एवं अर्थ की स्थिरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अन्य वेदाङ्गों की अपेक्षा व्याकरण का महत्व अधिक व्यापक एवं आधारभूत सिद्ध होता है। आधुनिक भाषाविज्ञान तथा संगणकीय भाषा-विज्ञान में भी पाणिनीय व्याकरण की उपयोगिता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

मुख्य शब्द : वेदाङ्ग, व्याकरणशास्त्र, पाणिनि, पतञ्जलि, भाषा-दर्शन, भाषाविज्ञान, वैदिक परम्परा।

1.प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की जड़ें वेदों में निहित हैं। वेद केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि वे ज्ञान, दर्शन, विज्ञान, समाज एवं संस्कृति के व्यापक स्रोत हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल स्तम्भ माने जाते हैं। वैदिक ज्ञान का संरक्षण प्राचीन काल में मुख्यतः श्रुति एवं स्मृति पर आधारित मौखिक परम्परा के माध्यम से किया जाता था। इस मौखिक परम्परा की सबसे बड़ी चुनौती थी—मन्त्रों की शुद्धता एवं मौलिकता को अक्षुण्ण बनाए रखना। यदि किसी मन्त्र के स्वर, मात्रा अथवा शब्दरूप में परिवर्तन हो जाता, तो उसका अर्थ परिवर्तित हो सकता था।

इसलिए वैदिक ऋषियों ने वेदों के संरक्षण हेतु विभिन्न सहायक शास्त्रों का निर्माण किया, जिन्हें वेदाङ्ग कहा गया।

वेदाङ्ग शब्द "वेदस्य अङ्गानि" अर्थात् वेदों के अंग से निर्मित है। वेदाङ्गों का उद्देश्य वेदों के अध्ययन को सरल, व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक बनाना था। शिक्षा ध्वनि एवं उच्चारण से संबंधित है, कल्प यज्ञीय विधानों का विवेचन करता है, निरुक्त शब्दार्थ का अध्ययन करता है, छन्द वैदिक मन्त्रों की लय एवं संरचना को निर्धारित करता है तथा ज्योतिष यज्ञीय काल-निर्धारण में सहायक होता है। इन सभी के मध्य व्याकरणशास्त्र भाषा के शुद्ध एवं वैज्ञानिक प्रयोग का आधार प्रस्तुत करता है।

व्याकरणशास्त्र संस्कृत भाषा की संरचना, धातु-व्यवस्था, प्रत्यय-विधान तथा वाक्यरचना का वैज्ञानिक विश्लेषण करता है। भारतीय परम्परा में व्याकरण को केवल भाषिक अनुशासन नहीं माना गया, बल्कि इसे ज्ञान, तर्क तथा दर्शन का आधार भी स्वीकार किया गया। महर्षि पाणिनि द्वारा रचित *अष्टाध्यायी* विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक व्याकरणिक रचनाओं में से एक मानी जाती है। इसमें अत्यंत संक्षिप्त सूत्रों के माध्यम से सम्पूर्ण संस्कृत भाषा को व्यवस्थित किया गया है (कार्डोना, 1997)। व्याकरणशास्त्र का महत्व केवल भाषिक दृष्टि से नहीं, बल्कि दार्शनिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय दर्शन में "शब्द" को ज्ञान का प्रमुख साधन माना गया है। भर्तृहरि ने "शब्दब्रह्म" की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए कहा कि सम्पूर्ण सृष्टि शब्द में निहित है। भाषा मनुष्य के चिंतन, अनुभूति एवं अभिव्यक्ति का माध्यम है। अतः भाषा की शुद्धता एवं संरचना का अध्ययन ज्ञान की शुद्धता से भी जुड़ा हुआ है (अय्यर, 1965)।

वर्तमान समय में भी व्याकरणशास्त्र की प्रासंगिकता बनी हुई है। आधुनिक भाषाविज्ञान, संरचनात्मक भाषा-अध्ययन तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में पाणिनीय व्याकरण की पद्धतियों का उपयोग किया जा रहा है। इस प्रकार व्याकरणशास्त्र केवल प्राचीन वैदिक परम्परा का विषय नहीं, बल्कि आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के लिए भी महत्वपूर्ण है।

साहित्य समीक्षा

भारतीय ज्ञान परम्परा में वेदाङ्गों पर प्राचीन एवं आधुनिक दोनों प्रकार के विद्वानों ने व्यापक अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। वेदाङ्गों की आवश्यकता एवं महत्व को समझने के लिए अनेक शोध कार्य हुए हैं। मैक्समूलर (1890) ने वैदिक साहित्य के अध्ययन में वेदाङ्गों को अत्यंत आवश्यक बताया तथा कहा कि वे वेदों के अध्ययन के उपकरण हैं। उनके अनुसार वेदाङ्गों के बिना वैदिक साहित्य की सही व्याख्या संभव नहीं है। वासुदेव शरण अग्रवाल (1963) ने भारतीय संस्कृति के संदर्भ में वेदाङ्गों की उपयोगिता को स्पष्ट किया। उन्होंने व्याकरण को वैदिक ज्ञान की संरचना का मूलाधार माना। उनके अनुसार व्याकरण के बिना वैदिक मन्त्रों की शुद्धता एवं अर्थ की स्थिरता को सुरक्षित रखना संभव नहीं था।

व्याकरणशास्त्र के क्षेत्र में महर्षि पाणिनि का योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। कार्डोना (1997) ने पाणिनीय व्याकरण की संरचना एवं वैज्ञानिकता का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि *अष्टाध्यायी* केवल संस्कृत भाषा का व्याकरण नहीं है, बल्कि यह भाषा के नियमों को अत्यंत तार्किक एवं वैज्ञानिक रूप में प्रस्तुत करने वाली प्रणाली है। आधुनिक भाषाविज्ञान में प्रयुक्त अनेक सिद्धांत पाणिनीय व्याकरण से मिलते-जुलते हैं। पतञ्जलि के *महाभाष्य* पर भी अनेक विद्वानों ने अध्ययन किया है। महाभाष्य केवल व्याकरण की व्याख्या नहीं करता, बल्कि भाषा-दर्शन, तर्क एवं ज्ञानमीमांसा के प्रश्नों पर भी विचार प्रस्तुत करता है। पतञ्जलि ने स्पष्ट किया कि व्याकरण का उद्देश्य केवल शब्दों की शुद्धता नहीं, बल्कि ज्ञान की शुद्धता को बनाए रखना भी है (शर्मा, 2008)।

भर्तृहरि का *वाक्यपदीय* भारतीय भाषा-दर्शन का अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। भर्तृहरि ने "शब्दब्रह्म" की अवधारणा प्रस्तुत

करते हुए भाषा को ज्ञान एवं चेतना का आधार माना। उनके अनुसार शब्द एवं अर्थ का संबंध अविभाज्य है। भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान का स्वरूप है (अय्यर, 1965)। आधुनिक विद्वानों जैसे कृष्णमूर्ति (2001) ने संस्कृत व्याकरण एवं भारतीय भाषावैज्ञानिक परम्परा का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार पाणिनीय व्याकरण आधुनिक भाषाविज्ञान की दृष्टि से अत्यंत उन्नत एवं वैज्ञानिक प्रणाली है।

यद्यपि व्याकरणशास्त्र पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं, तथापि वेदाङ्गों में उसकी तुलनात्मक श्रेष्ठता एवं दार्शनिक महत्व पर अपेक्षाकृत कम शोध हुआ है। अधिकांश अध्ययन केवल तकनीकी या भाषिक पक्ष तक सीमित रहे हैं। प्रस्तुत शोधपत्र इसी शोध-अंतराल को पूर्ण करने का प्रयास करता है।

3.उद्देश्य एवं शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य वेदाङ्गों में व्याकरणशास्त्र की भूमिका का अध्ययन करना, उसके दार्शनिक एवं भाषावैज्ञानिक महत्व का विश्लेषण करना तथा वैदिक ज्ञान के संरक्षण में उसकी उपयोगिता को स्पष्ट करना है। इसके साथ ही पाणिनि, कात्यायन एवं पतञ्जलि के योगदान का विवेचन करते हुए अन्य वेदाङ्गों की अपेक्षा व्याकरण की श्रेष्ठता को स्पष्ट करना भी इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

यह अध्ययन गुणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में प्राथमिक स्रोतों के रूप में वेद, पाणिनि की *अष्टाध्यायी*, पतञ्जलि का *महाभाष्य*, भर्तृहरि का *वाक्यपदीय* तथा यास्क का *निरुक्त* उपयोग में लाए गए हैं। द्वितीयक स्रोतों के रूप में पुस्तकों, शोध पत्रों एवं आलेखों का उपयोग किया गया है। शोध में विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है, जिसके माध्यम से विभिन्न विद्वानों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए व्याकरणशास्त्र की प्रधानता को स्पष्ट किया गया है।

4.वेदाङ्गों में व्याकरणशास्त्र की प्रधानता

व्याकरण शब्द "वि + आ + कृ" धातु से बना है, जिसका अर्थ है—विश्लेषण करना या व्यवस्थित रूप से समझना। संस्कृत परम्परा में व्याकरण को "शब्दानुशासन" कहा गया है। इसका उद्देश्य भाषा को शुद्ध, व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक बनाना है। व्याकरण भाषा के धातु, प्रत्यय, समास, संधि, स्वर-विन्यास तथा वाक्यरचना का अध्ययन करता है। संस्कृत व्याकरण केवल शब्दरूपों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह भाषा की संपूर्ण संरचना का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

व्याकरणशास्त्र का विकास वैदिक काल से प्रारम्भ माना जाता है। प्रारम्भिक वैदिक परम्परा में मन्त्रों की शुद्धता बनाए रखने के लिए ध्वनि एवं शब्दरूपों पर विशेष ध्यान दिया गया। समय के साथ भाषा में परिवर्तन की संभावना बढ़ी, जिससे व्याकरणिक नियमों की आवश्यकता अनुभव हुई। महर्षि पाणिनि ने संस्कृत भाषा को व्यवस्थित रूप प्रदान किया। उनकी *अष्टाध्यायी* लगभग चार हजार सूत्रों का संग्रह है। इसमें अत्यंत संक्षिप्त एवं तार्किक शैली में सम्पूर्ण संस्कृत भाषा का वर्णन किया गया है। पाणिनि ने धातु, प्रत्यय, समास, संधि एवं वाक्यरचना को वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्थित किया (कार्डोना, 1997)।

कात्यायन ने पाणिनीय सूत्रों पर वार्तिक लिखे और उनके सिद्धांतों का विस्तार किया। इसके पश्चात पतञ्जलि ने *महाभाष्य* की रचना की, जिसमें व्याकरण के साथ-साथ दर्शन एवं तर्क का समन्वय दिखाई देता है। पतञ्जलि के अनुसार व्याकरण का उद्देश्य भाषा को शुद्ध बनाकर ज्ञान की शुद्धता को सुरक्षित रखना है (शर्मा, 2008)। भारतीय दर्शन में भाषा को ज्ञान का मूल साधन माना गया है। न्याय दर्शन में शब्द को प्रमाण माना गया है, जबकि मीमांसा

दर्शन में वेदों की अपौरुषेयता को भाषा के माध्यम से सिद्ध किया गया है। भर्तृहरि ने "शब्दब्रह्म" की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए कहा कि सम्पूर्ण जगत् शब्द में निहित है। उनके अनुसार भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि चेतना एवं ज्ञान का स्वरूप है।

मनुष्य की सोच, अनुभूति एवं अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही संभव होती है। यदि भाषा में शुद्धता न हो, तो ज्ञान की स्पष्टता भी समाप्त हो सकती है। इसलिए व्याकरण ज्ञान की शुद्धता का आधार माना गया। वैदिक मन्त्रों का उच्चारण अत्यंत सूक्ष्म माना गया है। स्वर, मात्रा अथवा उच्चारण में परिवर्तन से मन्त्र का अर्थ बदल सकता है। व्याकरणशास्त्र ने शब्दों के सही रूप, ध्वनियों के उचित प्रयोग तथा वाक्यरचना की शुद्धता को सुरक्षित रखा। इससे वेदों की मौखिक परम्परा हजारों वर्षों तक अक्षुण्ण बनी रही। यदि व्याकरणिक नियम न होते, तो भाषा में परिवर्तन के कारण वैदिक मन्त्रों की मूल संरचना नष्ट हो सकती थी। इस प्रकार व्याकरण वैदिक ज्ञान के संरक्षण का प्रमुख साधन सिद्ध हुआ (कृष्णमूर्ति, 2001)।

अन्य वेदाङ्ग विशिष्ट क्षेत्रों तक सीमित हैं, जबकि व्याकरण सम्पूर्ण भाषा-व्यवस्था का आधार है। शिक्षा उच्चारण को शुद्ध बनाती है, परन्तु शब्दरचना का आधार व्याकरण है। निरुक्त शब्दार्थ स्पष्ट करता है, किन्तु शब्दों की संरचना व्याकरण पर निर्भर करती है। छन्द मन्त्रों की लय निर्धारित करता है, किन्तु भाषा की शुद्धता व्याकरण द्वारा नियंत्रित होती है। कल्प यज्ञीय विधानों को व्यवस्थित करता है, परन्तु उनके मन्त्रों की शुद्धता व्याकरण पर आधारित है। इस प्रकार व्याकरण सभी वेदाङ्गों का आधारभूत तत्व सिद्ध होता है।

व्याकरणशास्त्र का महत्व केवल प्राचीन भारत तक सीमित नहीं है। आधुनिक भाषाविज्ञान में भी पाणिनीय व्याकरण की वैज्ञानिकता को स्वीकार किया गया है। संरचनात्मक भाषाविज्ञान, जनरेटिव ग्रामर तथा संगणकीय भाषा-विज्ञान में पाणिनीय सिद्धांतों की उपयोगिता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। संस्कृत भाषा की नियमबद्धता एवं तार्किक संरचना ने आधुनिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मशीन अनुवाद जैसे क्षेत्रों को भी प्रभावित किया है।

5. निष्कर्ष एवं विवेचन

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वेदाङ्गों में व्याकरणशास्त्र का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं केंद्रीय है। व्याकरण केवल भाषा के नियमों का शास्त्र नहीं, बल्कि वैदिक ज्ञान-परम्परा के संरक्षण का मूल साधन है। पाणिनि ने संस्कृत भाषा को वैज्ञानिक संरचना प्रदान की। कात्यायन एवं पतञ्जलि ने उसे और अधिक विकसित एवं दार्शनिक रूप दिया। भारतीय भाषा-दर्शन में व्याकरण का संबंध केवल शब्दों से नहीं, बल्कि ज्ञान एवं चेतना से भी है।

व्याकरण ने वैदिक मन्त्रों की शुद्धता एवं मौलिकता को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अन्य वेदाङ्गों की अपेक्षा इसकी भूमिका अधिक व्यापक एवं आधारभूत है। आधुनिक भाषाविज्ञान में भी पाणिनीय व्याकरण की वैज्ञानिकता को स्वीकार किया गया है। संगणकीय भाषा-विज्ञान एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता में इसके सिद्धांतों का उपयोग हो रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि व्याकरणशास्त्र केवल प्राचीन परम्परा का विषय नहीं, बल्कि आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

6. उपसंहार

भारतीय ज्ञान परम्परा में व्याकरणशास्त्र का महत्व अत्यंत व्यापक एवं गहन है। यह केवल भाषा की शुद्धता का साधन नहीं, बल्कि ज्ञान, दर्शन एवं संस्कृति का संरक्षक भी है। वेदाङ्गों में व्याकरण की प्रधानता इस तथ्य को सिद्ध करती है

कि भाषा की शुद्धता के बिना ज्ञान की शुद्धता संभव नहीं है।

वर्तमान समय में जब भाषा एवं संप्रेषण के स्वरूप में तीव्र परिवर्तन हो रहा है, तब व्याकरणशास्त्र की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। आधुनिक भाषाविज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा संगणकीय अध्ययन में पाणिनीय व्याकरण के सिद्धांतों की उपयोगिता इस बात का प्रमाण है कि भारतीय व्याकरण परम्परा आज भी प्रासंगिक एवं प्रेरणादायक है। अतः यह कहा जा सकता है कि व्याकरणशास्त्र केवल वेदाङ्गों का एक अंग नहीं, बल्कि सम्पूर्ण वैदिक ज्ञान-व्यवस्था का आधारभूत स्तम्भ है।

***नव्यव्याकरण**
राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय
तीतरिया जयपुर

7. संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, वासुदेव शरण. (1963). *भारतीय संस्कृति और साहित्य*. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
2. अय्यर, के. ए. सुब्रमण्यम. (1965). *भार्तृहरि: ए स्टडी ऑफ वाक्यपदीय*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
3. कार्डोना, जॉर्ज. (1997). *Pāṇini: A Survey of Research*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
4. कृष्णमूर्ति, भद्रिराजु. (2001). *Comparative Dravidian Linguistics*. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. पतञ्जलि. *महाभाष्य*. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
6. पाणिनि. *अष्टाध्यायी*. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
7. भर्तृहरि. *वाक्यपदीय*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
8. मैक्समूलर, एफ. (1890). *Sacred Books of the East*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. शर्मा, रामविलास. (2008). *भारतीय भाषा विज्ञान की परम्परा*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
10. यास्क. *निरुक्त*. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।